International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 22-11-2019; Accepted: 23-12-2019
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 1; January 2020; Page No. 69-71

हिंदी समाचार पत्र 'दैनिक भास्कर' में वर्तनीगत एकरूपता की वर्तमान स्थिति: एक अध्ययन

रश्मि रानी

भाषा प्रौद्योगिकी विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

सारांश

हिंदी विश्व की तीव्र गति से विकसित होने वाली भाषा है। Ethnologue: Language of the World' के 2019 के वार्षिक ऑनलाइन अंक के अनुसार विश्व की 10 सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं की सूची में हिंदी का नाम भी शामिल है। इस सूची में हिंदी को चौथा स्थान प्राप्त है। भारत में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा भी हिंदी ही है। हिंदी के विकास की गति बढ़ाने हेतु इसकी कमजोरियों को दूर करना बहुत आवश्यक है। हिंदी भाषा के लेखन में वर्तनीगत भिन्नता हिंदी की एक कमजोरी मानी जा सकती है। हिंदी के एक ही शब्द को एक से अधिक वर्तनी के प्रयोग से लिखना हिंदी लेखन में भ्रम उत्पन्न करता है। इस कमजोरी को दूर करने के लिए ही हिंदी का मानकीकरण किया गया है। आवश्यकता मानक हिंदी के प्रचार-प्रसार की है। इस क्षेत्र में जनसंचार का महत्वपूर्ण प्रिंट माध्यम 'हिंदी' समाचार पत्र मुख्य भूमिका निभा सकता है। हिंदी समाचार पत्रों का पाठक वर्ग बहुत विशाल है यदि ये समाचार पत्र हिंदी की मानक वर्तनी का प्रयोग कर समाचार पत्रों में एकरूप वर्तनी का प्रयोग करें तो उचित वर्तनी वाले शब्दों को लेकर होने वाली दुविधा को दूर किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध पत्र में हिंदी के एक लोकप्रिय समाचार पत्र 'दैनिक भास्कर' का अध्ययन कर उसमें प्रयोग होने वाले भिन्न-भिन्न वर्तनियों वाले शब्दों के प्रयोग पर प्रकश डाला गया है।

मूल शब्द: जनसंचार, प्रिंट माध्यम, वर्तनीगत भिन्नता, मानक वर्तनी, मानकीकरण।

प्रस्तावना

हिंदी भाषा के मानकीकरण में प्रिंट मीडिया विशेष रूप से हिंदी समाचार पत्र महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। समाचार पत्रों में केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा निर्धारित हिंदी के मानक रूप का प्रयोग कर एक बड़े जनसमूह को मानक हिंदी से अवगत कराया जा सकता है। भारत एक बहुभाषभाषी देश है जिसमें हिंदी का एक विशेष स्थान है। यह भारत की राजभाषा के पद पर भी विराजमान है। इसलिए हिंदी के मानकीकरण हेतु सरकारी संस्थाओं द्वारा महत्वपूर्ण प्रयास किए गए हैं। अब इसके मानक रूप को मजबूती से स्थिर करने का लक्ष्य हमारे सामने है। हिंदी भाषा के लेखन में एकरूपता मानकीकरण का एक प्रमुख तत्व है। शब्दों के लेखन में वर्तनीगत भिन्नता व शब्द संरचना को लेकर दुविधा हिंदी को एकरूप होने से रोकती है। जिस भाषा के लेखन में एकरूपता का अभाव है उस भाषा को अंतरराष्ट्रीय भाषा का दर्जा मिलना मुश्किल है। यदि सभी जनसंचार माध्यम हिंदी के लेखन की एकरूपता को लेकर प्रतिबद्ध हो जाएं तो हिंदी लेखन को लेकर भ्रम की स्थिति दूर हो सकती है। दैनिक भास्कर हिंदी का एक लोकप्रिय दैनिक समाचार पत्र है। देश के 12 राज्यों (व संघ क्षेत्रों) से इसका प्रकशन होता है। इसके सवा करोड़ से भी अधिक पाठक हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में 'दैनिक भास्कर' में समाचार लेखन में प्रयुक्त हिंदी शब्दों में प्रयुक्त वर्तनी की एकरूपता का अध्ययन किया गया है। इस शोध पत्र में दैनिक भास्कर के दिल्ली अंक के समाचार पत्रों का का चयन किया गया है क्योंकि दिल्ली अंक में क्षेत्रीय भाषा के शब्दों की समस्या के कम होने के कारण हिंदी के शब्दों में प्रयुक्त वर्तनी का सही प्रकार से विश्लेषण किया जा सकता है। शोध पत्र में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि हिंदी के मानकीकरण में शब्द रचना की विविधता किस प्रकार एक समस्या का रूप धारण करती है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा हिंदी के मानकीकरण को लेकर बनाए गए पैमाने इस शोध कार्य का मुख्य आधार है।

साहित्यिक पुनरवलोकन: केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित 'देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण' पुस्तिका के आधार पर हिंदी समाचार-पत्रों के समाचारों में प्रयुक्त शब्दों में वर्तनीगत एकरूपता का अध्ययन प्राप्त जानकारी के अनुसार अभी तक नहीं किया गया है। एकरूपता से यहाँ अर्थ है-दो भिन्न प्रकार की वर्तनी में लिखे जाने वाले शब्दों में से एक ही रूप का पूरे समाचार पत्र में प्रयोग किया जाए। एकरूपता का संबंध हिंदी के मानकीकरण से है। भाषा का ऐसा स्वरूप जिसे सुशिक्षित और शिष्ट लोगों के समूह द्वारा प्रयुक्त किया जाता है मानक भाषा कहा जाता है। वर्तनीगत एकरूपता हिंदी के मानकीकरण हेतु बहुत आवश्यक है। एक मानक भाषा ही अंतरराष्ट्रीय भाषा बन सकती है। मानक भाषा और हिंदी के मानकीकरण को लेकर बहुत कार्य हुए हैं। साथ ही समाचार पत्रों की भाषा के पर भी कुछ कार्य अवश्य हुए हैं। प्रस्तुत शोध पत्र लेखन हेतु कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकों का अध्ययन किया गया जिनमें से कुछ का विवरण निम्नलिखित है-

1. **केंद्रीय हिंदी निदेशालय** द्वारा प्रकाशित '**देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण**' इस पुस्तिका में मानक हिंदी वर्णमाला तथा अंक, हिंदी वर्तनी का मानकीकरण, विरामादी चिह्न हिंदी के संख्यावाचक शब्दों की एकरूपता को स्पष्ट किया गया है। ये पुस्तिका मेरे शोध का आधार है। इसी पुस्तिका को केंद्र में रखकर यह शोध पत्र लिखा गया है।
2. मणिक मृगेश कृत **'समाचार पत्रों की भाषा'** एक अन्य प्रमुख पुस्तक है किंतु इस पुस्तक में भी समाचार पत्र की भाषा मात्र का अध्ययन किया गया है। इसमें लेखक ने दैनिक हिंदी समाचार-पत्रों की भाषा के विविध रूप की चर्चा कि है जिसके अंतर्गत समाचार पत्र, समाचार-पत्र और भाषा का संबंध तथा समाचार पत्रों की भाषा के विविध रूपों पर प्रकाश डाला गया है। समाचार पत्रों की भाषा में हिंदी के मानकीकरण का पुस्तक की भूमिका में मात्र उल्लेख भर किया गया है।
3. त्रिभुवननाथ शुक्ल कृत **'हिंदी भाषा का आधुनिकीकरण एवं मानकीकरण'** पुस्तक के अंतर्गत हिंदी भाषा का मानकीकरण, व्याकरण का मानकीकरण, वाक्य का मानकीकरण, शब्दावली का मानकीकरण, वर्तनी का मानकीकरण, सैद्धांतिक पक्ष और देवनागरी लिपि के मानकीकरण पर प्रकाश डाला गया है। शोध विषय को समझने में इस पुस्तक ने बहुत सहायता की।

समाचार पत्र 'दैनिक भास्कर' से कार्पस: प्रस्तुत शोध पत्र में 'दैनिक भास्कर' के दिल्ली अंक के अप्रैल माह, 2019 के कुछ अखबारों से ऐसे शब्दों को एकत्र किया गया है जो अनेकरूपता लिए हुए हैं। इन समाचार पत्रों के अध्ययन एवं विश्लेषण से कई ऐसे शब्द देखने को मिले जिनके लेखन में वर्तनीगत एकरूपता का अभाव है साथ ही शब्दों की संरचना के स्तर पर भी एकरूपता नहीं है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निर्देशानुसार प्रयोग नहीं किए गए हैं। सर्वप्रथम ऐसे शब्दों पर दृष्टि डालेंगे जो दो भिन्न वर्तनी के प्रयोग से लिखे पाए गए-

तालिका 0.1

दैनिक भास्कर में प्रयुक्त भिन्न-भिन्न वर्तनी वाले शब्द	केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा निर्धारित मानक वर्तनी
रुपए /रुपये	रुपए
किराए/किराये	किराए
पढ़िए /पढ़िये	पढ़िए
छुट् टी/छुट्टी	छुट् टी
मुद् दा/मुद्दा	मुद् दा
रद् द/रद्द	रद् द
स्थाई/स्थयी	स्थाई

उपर्युक्त तालिका में दर्शाए गए दैनिक भास्कर में दो भिन्न वर्तनी वाले शब्दों में से पहले रूप के प्रयोग को केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा मानक रूप निर्धारित किया गया है। रुपए, किराये, पढ़िये जैसे प्रयोग निदेशालय के निर्देशानुसार मानक नहीं है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने श्रुतिमूलक य एवं व के संबंध में कहा है कि "जहाँ श्रुतिमूलक य एवं व का प्रयोग विकल्प से होता है वहां इनका प्रयोग न किया जाए अर्थात किए : किये, नई : नयी, हुआ : हुवा आदि से पहले (स्वरात्मक) रूप का प्रयोग किया जाए।" किंतु दैनिक भास्कर में कई समाचारों में वर्तनी की एकरूपता के इस नियम का पालन नहीं किया गया है।

इसी प्रकार छुट् टी/छुट्टी, मुद् दा/मुद्दा, रद् द/रद्द जैसे प्रयोग में भी निदेशालय द्वारा निर्धारित मानक रूप का हर समाचार में पालन नहीं किया गया है। केंद्रीय हिंदी निदेशालय की पुस्तिका 'देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण' के के अनुसार "ड, छ, ट, ठ, ड, ढ, द और ह के संयुक्ताक्षर हल् चिह्न लगाकर ही बनाए जाने चाहिए।" किंतु रद्द, मुद्दे जैसे शब्दों का प्रयोग निदेशालय के निर्देश के अनुसार नहीं है। उपर्युक्त तलिका में दिखाई गई वर्तनीगत भिन्नता को प्रदर्शित करते एक समाचार का उदाहरण निम्नलिखित है-

उदाहरण संख्या:1

बुद्ध के देश में आतंक | राष्ट्रपति प्रेमदासा की हत्या के

1983: गृहयुद्ध शुरू, 3000 लोग मारे गए | 1991: लिट्टे के हमले में राजीव की मौत

तमिल वॉर के खात्मे की

16 मई को लिट्टे पर जीत के 10 साल पूरे होने वाले हैं, सरकार कर रही थी जश्न की तैयारी

22अप्रैल 2019, पृष्ठ संख्या-11

उपर्युक्त समाचार में लिट् टे शब्द को दो प्रकार से लिखा देखा जा सकता है। एक ही समाचार में दो भिन्न-भिन्न वर्तनियों का एक साथ प्रयोग पाठक को दुविधा में डालने का कार्य कर सकता है।

अनुस्वार के प्रयोग में अनियामितता: दैनिक भास्कर के अप्रैल, 2019 के अख़बारों में समाचार लेखन में अनुस्वार के प्रयोग में भी अनियमितता देखने को मिली। किसी शब्द को पंचमाक्षर के हल् रूप में लिखा गया तो किसी में अनुस्वार का प्रयोग किया गया। ऐसे कुछ शब्दों के उदाहरण निम्नलिखित तलिका में दिए जा रहे हैं-

तालिका 0.2

दैनिक भास्कर में प्रयुक्त शब्द	केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा निर्धारित मानक वर्तनी
महिंद्र/महिन्द्र	महिंद्र
केंद्रीय/केन्द्रीय	केंद्रीय
संबंध/सम्बन्ध/सम्बंध	संबंध
लंबे/लम्बे	लंबे
अंबाला/अम्बाला	अंबाला

तलिका 0.2 में दैनिक भास्कर में प्रयुक्त अनुस्वार संबंधी वर्तनीगत भिन्नता को दर्शाता दैनिक भास्कर के एक समाचार का उदाहरण निम्नलिखित है-

उदाहरण संख्या: 2

ये भी थी एक वजह | दोनों के बीच आ गई तीसरी

इस दंपति के बीच एक परायी औरत भी विवाद की एक बड़ी वजह थी। यह महिला रोहित के परिवार से लंबे समय से जुड़ी है। उसका पति एनडी तिवारी के पास काम करता था। लगभग 20 साल से इनके सम्बंध तिवारी परिवार के लिए घर जैसे हो चुके थे। लेकिन जब अपूर्वा शादी करके इस घर में आई और उसने रोहित के साथ इस महिला का फ्रैंडली व्यवहार देखा तो उसे पंसद नहीं आया। बताया गया है कि वह महिला रोहित के साथ शराब भी पीती थी। अपूर्वा और रोहित के बीच दूरियां बढ़ने लगीं। रोहित की मां उज्ज्वला शर्मा बेटे के इस महिला के साथ किसी तरह गलत सम्बंध नहीं होने का लगातार विश्वास अपूर्वा को दिलाती थीं। पर शक का कीड़ा अपूर्वा के दिमाग से हट नहीं पाया।

2020

25अप्रैल 2019 पृष्ठ संख्या-2

उपर्युक्त समाचार में सम्बंध का प्रयोग किया गया है जबकि निदेशालय पंचमाक्षर के हल रूप के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करने का निर्देश देता है। निदेशालय के अनुसार सम्बंध को संबंध लिखा जाना चाहिए।

शब्द संरचना के स्तर पर एकरूपता का अभाव: शब्द की संरचना के स्तर पर भी दैनिक भास्कर की भाषा में अनेकरूपता देखने को मिली। इस अनेकरूपता को निम्नलिखित तालिका में देखा जा सकता है-

तालिका-**0.3**

दैनिक भास्कर में प्रयुक्त भिन्न-भिन्न शब्द-संरचना	उचित शब्द संरचना
दिनभर/दिन भर	दिन भर
दुनियाभर/दुनिया भर	दुनिया भर
उच्चस्तरीय/उच्च स्तरीय	उच्चस्तरीय
खासतौर/खास तौर	खासतौर
सुरक्षाकर्मी/सुरक्षा कर्मी	सुरक्षाकर्मी

उपर्युक्त तालिका में दिए गए उदाहरण दैनिक भास्कर के अप्रैल, 2019 के अख़बारों के अध्ययन के उपरांत मिले। इन उदाहरणों के अतिरिक्त ऐसे कई शब्द मिले जिनकी संरचना में अनेकरूपता पाई गई। ऐसे शब्द जिन्हें मिलाकर लिखा जाता है उन्हें कई समाचारों में अलग करके लिखने की प्रवृत्ति पाई गई। ऐसे कई उदाहरण अख़बार में देखने को मिले।

उदाहरण: 3

रिफ्रेशर्स बुक को लेकर भी गाइडलाइन का पालन नहीं

कई निजी स्कूल 8वीं के बाद 12वीं तक विभिन्न सब्जेक्ट के खास तौर से मैथ्स और साइंस सब्जेक्ट की रिफ्रेशर्स बुक लगाते हैं। कई किताबों के दाम 500 से 2000 रु. तक होते हैं। सीबीएसई की गाइडलाइन और हाईकोर्ट के आदेश में कहा गया है अगर टीचर को लगता है कि रिफ्रेशर्स बुक की जरूरत है तो टीचर्स व स्कूल खरीदें, न कि स्टूडेंट्स से कहें।

22 अप्रैल 2019, पृष्ठ संख्या- 2

उपर्युक्त समाचार में चिह्नित शब्द 'खासतौर' को खास तौर के रूप में लिखा गया है। जबकि शब्द संरचना की दृष्टि से 'खासतौर' शब्द ही सही संरचना वाला शब्द है।

निष्कर्ष: अतः इस अध्ययन विश्लेषण से बात स्पष्ट हो जाती है कि दैनिक समाचार पत्र हिंदी के मानक रूप को स्थिर करने में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। भारत की एक बहुत बड़ी जनसंख्या दैनिक हिंदी समाचार पत्रों को प्रतिदिन पढ़ती है। उसमें छपे शब्दों की वर्तनी और संरचना को देखती है। इस शोध पत्र में हिंदी के एक प्रतिष्ठित 'दैनिक भास्कर' की भाषा में शब्दों की वर्तनी व संरचना का विश्लेषण प्रस्तुत करने का आशय यही है कि हिंदी भाषा की इस वर्तनीगत कमजोरी को दूर किया जा सके। क्योंकि हिंदी समाचार पत्रों की पहुँच के बड़े जनसमूह तक है इसलिए मानक हिंदी को स्थिरता प्रदान करने में इनकी भूमिका बहुत अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। इसलिए वर्तनी की एकरूपता का ध्यान व साथ ही शब्दों की संरचना पर ध्यान देना भी समाचार पत्र के उपसंपादकों हेतु बहुत आवश्यक है।

ग्रंथ सूची

1. टेकचन्दानी, रवि प्रकाश (2016). देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण. नई दिल्ली. केंद्रीय हिंदी निदेशालय.
2. मृगेश, मणिक. (2016). समाचार पत्रों की भाषा. नई दिल्ली. वाणी प्रकाशन.
3. शुक्ल, त्रिभुवननाथ. (2015). हिंदी भाषा का आधुनिकीकरण एवं मानकीकरण. नई दिल्ली. वाणी प्रकाशन.
4. श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ. (1995). हिंदी भाषा-संरचना के विविध आयाम. नई दिल्ली. राधाकृष्ण प्रकाशन.
5. श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ. (2014). भाषा-विज्ञान सैद्धांतिक चिंतन. नई दिल्ली. राधाकृष्णन प्रकाशन.

संदर्भ सूची

1. दैनिक भास्कर , 01 अप्रैल 2019
2. दैनिक भास्कर, 05 अप्रैल 2019
3. दैनिक भास्कर, 06 अप्रैल 2019
4. दैनिक भास्कर, 10 अप्रैल 2019
5. दैनिक भास्कर, 15 अप्रैल 2019
6. दैनिक भास्कर, 20 अप्रैल 2019
7. दैनिक भास्कर, 22 अप्रैल 2019
8. दैनिक भास्कर, 25 अप्रैल 2019

9ण दैनिक भास्कर, 30 अप्रैल 2019